श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्रीराम स्तुति- मानस कृत

(रामचरितमानस अंतर्गत अहिल्या, ऋषि अत्रि, जटायु, वेद, ब्रह्मदेव, इंद्रदेव तथा महादेव कृत)

अहिल्या द्वारा- (बालकांड)

परसत पद पावन सोकनसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥ 1॥

अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥ 2॥

धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई॥ 3॥

मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदायी।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई॥ 4॥

मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना॥ 5॥

बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना॥ 6॥

जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।
सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी॥ 7॥

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी॥ 8॥

अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल॥

ब्रह्मा जी द्वारा – (बालकांड)

जय जय सुरनायक, जन सुखदायक, प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी, जय असुरारी, सिधुंसुता प्रिय कंता॥ 1॥

पालन सुर धरनी, अद्‌भुत करनी, मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला, दीनदयाला, करउ अनुग्रह सोई॥ 2॥

जय जय अबिनासी, सब घट बासी, ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं, चरित पुनीतं, माया रहित मुकुंदा॥ 3॥

जेहि लागि बिरागी ,अति अनुरागी, बिगत मोह मुनिबृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं, गुन गन गावहिं, जयति सच्चिदानंदा॥ 4॥

जेहिं सृष्टि उपाई, त्रिबिध बनाई, संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी ,चिंत हमारी, जानिअ भगति न पूजा॥ 5॥

जो भव भय भंजन, मुनि मन रंजन, गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी ,छाड़ि सयानी, सरन सकल सुरजूथा॥ 6॥

सारद श्रुति सेषा, रिषय असेषा, जा कहुँ कोउ नहि जाना।
जेहि दीन पिआरे, बेद पुकारे, द्रवउ सो श्रीभगवाना॥ 7॥

भव बारिधि मंदर, सब बिधि सुंदर, गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर, परम भयातुर, नमत नाथ पद कंजा॥ 8॥

दोहा:

जानि सभय सुर भूमि सुनि, बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ, हरनि सोक संदेह।। 186।।

ऋषि अत्रि द्वारा (अरण्यकांड)

नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं॥
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं॥ 1॥

निकाम श्याम सुंदरं। भवांबुनाथ मंदरं॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं। मदादि दोष मोचनं॥ 2॥

प्रलंब बाहु विक्रमं। प्रभोऽप्रमेय वैभवं॥
निषंग चाप सायकं। धरं त्रिलोक नायकं॥ 3॥

दिनेश वंश मंडनं। महेश चाप खंडनं॥
मुनींद्र संत रंजनं। सुरारि वृंद भंजनं॥ 4॥

मनोज वैरि वंदितं। अजादि देव सेवितं॥
विशुद्ध बोध विग्रहं। समस्त दूषणापहं॥ 5॥

नमामि इंदिरा पतिं। सुखाकरं सतां गतिं॥
भजे सशक्ति सानुजं। शची पति प्रियानुजं॥ 6॥

त्वदंघ्रि मूल ये नराः। भजंति हीन मत्सराः॥
पतंति नो भवार्णवे। वितर्क वीचि संकुले॥ 7॥

विविक्त वासिनः सदा। भजंति मुक्तये मुदा॥
निरस्य इंद्रियादिकं। प्रयांतिते गतिं स्वकं॥ 8॥

तमेकमद्भुतं प्रभुं। निरीहमीश्वरं विभुं॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलं॥ 9॥

भजामि भाव वल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं॥
स्वभक्त कल्प पादपं। समं सुसेव्यमन्वहं॥ 10॥

अनूप रूप भूपतिं। नतोऽहमुर्विजा पतिं॥
प्रसीद मे नमामि ते। पदाब्ज भक्ति देहि मे॥ 11॥

पठंति ये स्तवं इदं। नरादरेण ते पदं॥

व्रजंति नात्र संशयं। त्वदीय भक्ति संयुताः॥ 12॥

दोहा:

बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि।

चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि॥ 4॥

जटायु द्वारा (अरण्यकांड)

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।

दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही॥

पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।

नित नौमि रामु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं॥ 1॥

बलमप्रमेयमनादिमजमब्यक्तमेकमगोचरं।

गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं॥

जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं।

नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं॥ 2॥

जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गावहीं।

करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥

सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई।

मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई॥ 3॥

जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा।

पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा॥

सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी।

मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी॥ 4॥

अबिरल भगति मागि बर गीध गयउ हरिधाम।

तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम॥

ब्रह्मा जी द्वारा (लंका काण्ड)

जय राम सदा सुख धाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे।
भव बारन दारन सिंह प्रभो। गुन सागर नागर नाथ बिभो॥ 1॥

तन काम अनेक अनूप छबी। गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी।
जसु पावन रावन नाग महा। खगनाथ जथा करि कोप गहा॥ 2॥

जन रंजन भंजन सोक भयं। गत क्रोध सदा प्रभु बोधमयं।
अवतार उदार अपार गुनं। महि भार बिभंजन ग्यानघनं॥ 3॥

अज ब्यापकमेकमनादि सदा। करुनाकर राम नमामि मुदा।
रघुबंस बिभूषन दूषन हा। कृत भूप बिभीषन दीन रहा॥ 4॥

गुन ग्यान निधान अमान अजं। नित राम नमामि बिभुं बिरजं।
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं। खल बृंद निकंद महा कुसलं॥ 5॥

बिनु कारन दीन दयाल हितं। छबि धाम नमामि रमा सहितं।
भव तारन कारन काज परं। मन संभव दारुन दोष हरं॥ 6॥

सर चाप मनोहर त्रोन धरं। जलजारुन लोचन भूपबरं।
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं। मद मार मुधा ममता समनं॥ 7॥

अनवद्य अखंड न गोचर गो। सब रूप सदा सब होइ न गो।
इति बेद बदंति न दंतकथा। रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा॥ 8॥

कृतकृत्य बिभो सब बानर ए। निरखंति तनानन सादर ए।
धिग जीवन देव सरीर हरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे ॥ 9॥

अब दीनदयाल दया करिऐ। मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ।
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ। दुःख सो सुख मानि सुखी चरिऐ॥ 10॥

खल खंडन मंडन रम्य छमा। पद पंकज सेवित संभु उमा।
नृप नायक दे बरदानमिदं। चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं॥ 11॥

दोहा:

बिनय कीन्ह चतुरानन प्रेम पुलक अति गात।
सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात॥ 111॥

इंद्रदेव कृत – (लंका कांड)

जय राम सोभा धाम। दायक प्रनत बिश्राम॥
धृत त्रोन बर सर चाप। भुजदंड प्रबल प्रताप॥ 1॥

जय दूषनारि खरारि। मर्दन निसाचर धारि॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भए देव सकल नाथ॥ 2॥

जय हरन धरनी भार। महिमा उदार अपार॥
जय रावनारि कृपाल। किए जातुधान बिहाल॥ 3॥

लंकेस अति बल गर्ब। किए बस्य सुर गंधर्ब॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सब कें लाग॥ 4॥

परद्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फलु पापिष्ट॥
अब सुनहु दीन दयाल। राजीव नयन बिसाल॥ 5॥

मोहि रहा अति अभिमान। नहिं कोउ मोहि समान॥
अब देखि प्रभु पद कंज। गत मान प्रद दुःख पुंज॥ 6॥

कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव। अब्यक्त जेहि श्रुति गाव॥
मोहि भाव कोसल भूप। श्रीराम सगुन सरूप॥ 7॥

बैदेहि अनुज समेत। मम हृदयँ करहु निकेत॥
मोहि जानिऐ निज दास। दे भक्ति रमानिवास॥ 8॥

दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं।
सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं॥ 9॥

सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुजतनु अतुलितबलं।
ब्रह्मादि संकर सेब्य राम नमामि करुना कोमलं॥ 10॥

दोहा:

अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल।
काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल॥ 113॥

शिवजी द्वारा – (लंकाकाण्ड)

मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥
मोह महा घन पटल प्रभंजन। संसय बिपिन अनल सुर रंजन॥
अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर। भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर॥
काम क्रोध मद गज पंचानन। बसहु निरंतर जन मन कानन॥

बिषय मनोरथ पुंज कंज बन। प्रबल तुषार उदार पार मन॥
भव बारिधि मंदर परमं दर। बारय तारय संसृति दुस्तर॥
स्याम गात राजीव बिलोचन। दीन बंधु प्रनतारति मोचन॥
अनुज जानकी सहित निरंतर। बसहु राम नृप मम उर अंतर॥
मुनि रंजन महि मंडल मंडन। तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन॥

दोहा:

नाथ जबहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार।
कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार॥ 115॥

चारों वेदों द्वारा- (उत्तरकाण्ड)

जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने।
दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज बल हने॥
अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुःख दहे।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे॥ 1॥

तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे।
भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे॥
जे नाथ करि करुना बिलोकि त्रिबिधि दुःख ते निर्बहे।
भव खेद छेदन दच्छ हम कहुँ रच्छ राम नमामहे॥ 2॥

जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी॥
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे॥ 3॥

जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी।
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे॥ 4॥

अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे॥ 5॥

अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे॥ 6॥

दोहा:

सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्हि उदार।
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार॥13 क॥
बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर।
बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥13 ख॥

शिवजी द्वारा- (उत्तरकाण्ड)

जय राम रमारमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनं॥
अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो॥ 1॥

दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा॥
रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे॥ 2॥

महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं।
मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥ 3॥

मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए॥
हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। बिषया बन पावँर भूलि परे॥ 4॥

बहु रोग बियोगन्हि लोग हए। भवदंघ्रि निरादर के फल ए॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते॥ 5॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें॥ 6॥

नहिं राग न लोभ न मान सदा। तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥ 7॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ। पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ॥
सम मानि निरादर आदरही। सब संतु सुखी बिचरंति मही॥ 8॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महागद मान अरी॥ 9॥

गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीन जनं॥ 10॥

दोहा:

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।
पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥14 क॥
बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।
तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास॥ 14 ख॥